विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

विषय-हिंदी ***दिनांक-06/07/2020***
वर्ग-तृतीय ***वर्ग-शिक्षिका— नीतू कुमारी***
पाठ - 9 (दो-दो कितने)

सुप्रभात बच्चों,

पिछली कक्षा में आपने 'दो-दो कितने' कविता का आधा भाग पढ़ा। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप अध्ययन-सामग्री पूरे मनोयोग से पढ़े होंगे। आज की कक्षा में आपको उसी कविता का शेष भाग पढ़ना है। जो कि इस प्रकार है:—

दो हाथों की दो कलाइयाँ,
टाँगे दो और घुटने दो हैं।
चलना-फिरना, उठना- बैठना,
दो पैरों के टखने दो हैं।
एक शरीर में……..

पैरों के नीचे दो तलवे,
भागो जिनसे, एड़ियाँ दो हैं।
बंद हों तो दो मुट्ठी हो जाएँ,
खोलें तो ये हथेलियाँ दो हैं।
एक शरीर में……

भूल गया था मार तमाचा,
मेरे मुँह पर गाल भी दो हैं।
दोनों पहलू झाँक के देखो,
झाँकने को भी बगलें दो हैं।
एक शरीर में……

कितने सारे दो हैं फिर भी,
एक दिल है, एक ही जाँ है
एक आकाश, एक ही सूरज,
एक ज़मीं, एक हिंदुस्ताँ हैं।

—— गुलज़ार

गृहकार्य :—

बच्चों कविता को सुंदर-साफ़ अक्षरों में लिखें तथा याद करें एवं याद करके माता- पिता को सुनाएँ।